Indian J. Soc. & Pol. 09 (01) :109-112 : 2022 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JANUARY 2022 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत–अफगान सम्बन्ध एवं तालिबान संकट

ममता मणि त्रिपाठी[1]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति शास्त्र), बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुशीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

ABSTRACT

अफगानिस्तान दक्षिण एशिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण देश है इसके उत्तर में हिन्दूकुश पर्वतमाला है और पश्चिमी सीमा पर रेगिस्तान है इस पर्वतीय क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 6,52,860 किमी0 है। इसकी कुल आबादी 39,348,065 है। यहाँ ऊँचे पहाड़ों की श्रंखला के कारण यहाँ की जलवायु ठंडी है। यह 6 (छः) देशों के साथ पाकिस्तान, ईरान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, तजाकिस्तान, चीन से सीमाएं साझा करता है यहाँ की मुद्रा को अफगानी कहा जाता है। अफगानिस्तान एशिया का इकलौता देश है जिस पर यूनानी, अरब, मंगोलो ने आक्रमण किया साथ ही इसे सोवियत रुस और ब्रिटेन जैसी वैश्विक शक्तियों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। 15 फरवरी 1989 को सोवियत संघ की अंतिम टुकड़ी भी अफगानिस्तान से वापस चली गयी। अफगानिस्तान से सोवियत संघ की वापसी के बाद तालिबान के उदय की शुरुआत होती है तालिबान पश्तो भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है छात्र। पश्तूनों के नेतृत्व में उभरा तालिबान अफगानिस्तान के परिदृश्य पर पूर्णरुप से वर्ष 1994 में सामने आया। सितम्बर 1995 में तालिबान ने ईरान सीमा से लगे हेरात प्रांत पर कब्जा कर लिया। 1996 में तालिबान ने काबुल पर कब्जा कर लिया तथा 1998 तक लगभग 90 फीसदी अफगानिस्तान पर तालिबान का नियन्त्रण हो गया। 2001 में न्यूयार्क में आतंकवादी हमले के उपरांत तालिबान पर आरोप लगाया कि उसने ओसामा बिन लादेन और अलकायदा को पनाह दी है। अमेरिकी सेना की वापसी और फिर देश पर तालिबान के नियन्त्रण से अफगानिस्तान एक बार फिर अफरातफरी का शिकार हुआ है। नए परिदृश्य में न केवल अफगानिस्तान में तालिबान का तेजी से आगे बढ़ना सुनिश्चित हुआ बल्कि कानून का शांतिपूर्ण आत्मसम्पर्क भी तय हो गया। अफगानिस्तान मे तालिबान शासन की बहाली भारतीय सुरक्षा के लिए कुछ अत्यंत गंभीर आसन्न चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस पर व्यापक प्रकाश डाला जायेगा।

KEYWORDS : *मैत्री संबंध, भौगोलिक सीमा, गणतंत्र, आंतरिक राजनीति, व्यापारिक संबंध, सांस्कृतिक सहयोग, आतंकवाद, मानवाधिकार, अभिव्यक्ति।*

भारत अफगानिस्तान संबंधों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। ऋग्वेद में कुछ ऐसी नदियों का उल्लेख मिलता है जिनका बहाव क्षेत्र अफगानिस्तान रहा है। संस्कृत विद्वान पाणिनी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक व्याकरण मे वर्णन किया है। भारत के प्राचीन ग्रंथों मे इस बात का उल्लेख मिलता है कि भारत और कंधार के राजघरानें एक दूसरे से संबंधित थे। कौरवों की माता गाँधारी को कंधार का बताया जाता है। ऐतिहासिक तथ्य बताते हैं कि 305 ईसा पूर्व में चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को पराजित कर पूर्वी अफगानिस्तान की स्थापना की। अशोक के धर्म प्रचारक और बौद्ध भिक्षु यहाँ धर्म का प्रचार करते थे। शकों, कुषाणों, हूणों, अरबों, अफगानों व तुर्कों के शासनकाल तक भारत अफगानिस्तान के बीच अच्छे संबंध थे। 1947 में देश के विभाजन के बाद भारत अफगानिस्तान के बीच की दूरी बढ़ गयी। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरु ने भारत अफगान मैत्री संबंधों पर बल दिया। सन् 1947 से आज तक भारत अफगानिस्तान संबंध मित्रतापूर्वक रहे। भारत की आजादी के समय नई दिल्ली में आयोजित एशियाई संबंध सम्मेलन में अफगान प्रतिनिधियों ने भारत अफगान मैत्री संबंधों में बल देते कहा कि मित्रता के जो सूत्र आज हमें आपस में बाँधे हुए हैं वे असली एवं सुदृढ़ हैं। 1947 में भारत का विभाजन हुआ, भारत उपमहाद्वीप के विभाजन का एक परिणाम यह हुआ कि भारत अफगानिस्तान के बीच पाकिस्तान के आ जाने से दोनों देशों की भौगोलिक दूरियाँ बन गयी। पंडित नेहरु 1958 में अफगानिस्तान की यात्रा पर गये इस यात्रा से भारत अफगान संबंधों मे नई ऊर्जा का संचार हुआ। फरवरी 1959 को अफगान प्रधानमंत्री मोहम्मद दाऊद भारत आये। उनकी यात्रा पर आने पंडित नेहरु ने कहा कि–दोनों देश शताब्दियों से ही ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंधों के कारण एक दूसरे से जुड़े हैं। सन् 1963 में जब चीन ने भारत की घेराबन्दी के लिए अफगानिस्तान पाकिस्तान के साथ सीमा समझौते पर हस्ताक्षर कर भारत के सामने चुनौती प्रस्तुत की तो उस समय यह माना जाने लगा कि अफगानिस्तान में चीन की बढ़ती दिलचस्पी भारत अफगान रिश्तों पर प्रभाव डाल सकती है। जुलाई 1971 में अफगानिस्तान में सत्ता परिवर्तन के बाद अब्दुल सत्तार सत्ता में आये। भारत के विदेश मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह अफगानिस्तान के दौरे पर गये। अफगानिस्तान की आंतरिक राजनीति में साल 1973 अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस वर्ष अफगानिस्तान में गणतंत्र को स्वीकार किया गया। गणतंत्र लागू

1: Corresponding Author

होने के पश्चात भारत में सबसे पहले अफगान गणतंत्र को मान्यता प्रदान की। अफगानिस्तान को मान्यता प्रदान करने वाला भारत दुनिया का पहला देश था।

सन् 1979 में जब सोवियत सेनाओं नें अफगानिस्तान मे प्रवेश किया तब भारत दक्षिण एशिया का एकमात्र ऐसा देश था जिसने सोवियत समर्थित अफगानिस्तान की जनतांत्रिक गठबंधन सरकार का समर्थन किया था। 1990 के अफगान गृहयुद्ध तथा तालिबान के सत्ता के आने के बाद दोनों देशों के संबंध मे ठहराव आ गया। 1999 में कंधार विमान अपहरण काण्ड ने संबंधों को अधिक खराब कर दिया। वर्ष 1998 तक तालिबान ने अफगानिस्तान के 80 प्रतिशत भाग पर अपना कब्जा कर लिया तथा उसकी सत्ता को दुनिया के तीन देशों–पाकिस्तान, सऊदी अरब और संयुक्त अमीरात की मान्यता मिल गयी। तालिबान के सत्ता काल में अफगानिस्तान आतंकी गतिविधियों की शरणस्थली बन गया। इस दौरान यहाँ कई आतंकी संगठन पनपे जिन्हें पाकिस्तान की मदद भी हासिल थी, पाकिस्तान इन संगठनों की मदद भी हासिल थी पाकिस्तान इन संगठनों की मदद से कश्मीर में भारत विरोधी गतिविधियों को अंजाम देता था। अलकायदा नें वर्ष 2001 में 11 सितम्बर को अमेरिका में वहाँ के इतिहास के सबसे बड़े आतंकी हमले को अंजाम दिया जिससे अमेरिका का वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर तबाह हो गया। इस आतंकी कार्यवाही के जबाब में अमेरिका के नेतृत्व वाली गठबंधन देशों की सेना ने अफगानिस्तान मे इनड्यूरिंग फ्रीडम आपरेशन शुरु किया तथा प्रत्यक्ष सैन्य कार्यवाही की। अमेरिकी हमले से तालिबानी शासन के पैर उखड़ने लगे और अलकायदा प्रमुख ओसामा बिन लादेन समेत ज्यादातर आतंकी फरार हो गये।

वर्ष 2003 में जब अमेरिका ने इराक पर आक्रमण कर दिया तो उसका ध्यान अफगानिस्तान से फिर हट गया किन्तु उसकी अगुवाई में NATO के सैनिक वहाँ लगे रहे जिससे तालिबान सत्ता में वापसी नही कर पाया और यहाँ लोकतांत्रिक गतिविधिया धीरे–धीरे बढ़ने लगी। 28 अगस्त 2005 को भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अफगानिस्तान की यात्रा पर गये, यात्रा के दौरान करजई नें भारतीय प्रधानमंत्री के समक्ष सार्क (SAARC) से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की। 2006 में अफगानिस्तान के राष्ट्रपति करजई का आगमन हुआ तो डॉ0 कलाम ने इंदिरा गाँधी निःशस्त्रीकरण एवं विकास पुरस्कार प्रदान किया। अपगैल 2007 को नई दिल्ली में आयोजित SAARC के 14वें शिखर सम्मेलन में अफगानिस्तान को SAARC के आठवें सदस्य के रुप में मान्यता दी गई। जुलाई 2008 व अक्टूबर 2009 में अफगानिस्तान के दूतावास को निशाना बनाया। मई 2013 में भारत यात्रा के समय हामिद करजई इस बात को स्वीकार कर रहे थे कि पाकिस्तान हमारा घनिष्ठ पड़ोसी है जबकि भारत हमारा प्राचीन मित्र है। पाकिस्तान के साथ संबंधों के आधार पर हम भारत से सम्बंध नही तोड़ेंगे। इसी साल करजई फिर भारत आये और दोनों देश आपस में सैन्य तथा सुरक्षा सहयोग बढ़ाने पर सहमत हो गये।

वर्ष 2014 में भारत में सत्ता परिवर्तन हुआ तथा नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में NDA की सरकार बनी। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में सभी SAARC देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित कर 'पड़ोसी प्रथम' नीति का शंखनाद किया। मोदी के निमंत्रण पर करजई भारत आये 2014 में भारत ने अफगानिस्तान को सामरिक रुप से मजबूत बनाने के लिए अफगानिस्तान रुस के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। इसके अनुसार रुस अफगानिस्तान को जरुरी सामान उपलब्ध करायेगा। 2014 में अफगानिस्तान में सत्ता परिवर्तन हुई मोहम्मद अशरफ गनी राष्ट्रपति बने उनकी विदेश नीति की प्राथमिकताओं में भारत का स्थान नीचे था। 2015 को उन्होंने भारत का दौरा किया। गनी ने भारत यात्रा के दौरान वचन दिया कि वे अपने–अपने भू–भाग का प्रयोग दूसरे देशों के विरुद्ध नही होने देंगे। दिसम्बर 2015 में प्रधानमंत्री मोदी अफगानिस्तान की यात्रा पर गए, यात्रा के दौरान उन्होंने भारत के आर्थिक सहयोग से निर्मित संसद भवन का उद्घाटन किया। 2016 में पुनः प्रधानमंत्री पाँच देशों की यात्रा के दौरान अफगानिस्तान उनका पहला पड़ाव था। इस यात्रा में मोदी जी ने भारत–अफगान मैत्री सेतु का उद्घाटन किया। 2019 में भारत तथा अफगानिस्तान में चुनाव हुए। भारत में नरेन्द्र मोदी तो अफगानिस्तान में गनी की सरकार बनी। कोविड–19 वैश्विक महामारी के कारण वर्ष 2020 में अंतर्राष्ट्रीय आवागमन में प्रतिबंधों के कारण दोनों नेताओं को भौतिक रुप से मिलने का अवसर तो नही मिल पाया लेकिन वर्चुवल बैठकों के माध्यम से दोनों देशों के बीच संवाद जारी रहा।

भारत और अफगानिस्तान के बीच प्राचीन काल से ही व्यापारिक संबंध रहे हैं उस समय अफगानिस्तान के लिए भारत एक बाजार था। आजादी के बाद भारत ने अपने सीमित संसाधनों से अफगानिस्तान के विकास में रुचि दिखायी। वर्ष 2021 में भारत नें अफगानिस्तान के पुर्ननिर्माण एवं आर्थिक विकास के लिए 100 मिलियन डालर की आर्थिक सहायता की। मार्च 2003 में अफगान राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान Preferential Trade Agreement पर हस्ताक्षर हुए। जून वर्ष 2016 में भारत अफगान आर्थिक संबंध तब और ऊँचाइयों पर पहुंच गये। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व अफगान राष्ट्रपति गनी ने हेरात प्रांत के चिश्ती–ए–शरीफ जिले की हारी नदी पर भारत अफगानिस्तान मित्रता सेतु का उद्घाटन किया। जून 2017 में नई दिल्ली से काबुल और कंधार के बीच एक कार्गो कोरिडोर की स्थापना हुई।

दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सहयोग भी रहा संगीत, कला, वास्तुशिल्प, भाषा व्यंजन के क्षेत्रों में गहरे संबंध रहे। अफगानिस्तान की राष्ट्रीय भाषा पश्तो का मूल स्रोत संस्कृत रहा है इसलिए उसे भारतीय साहित्य में साहित्य की बहन कहा

जाता है। पिछले 14 वर्षों के दौरान अफगानिस्तान के 60 हजार से अधिक छात्र भारत आकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। भारत सरकार बड़े पैमाने पर अफगान धरोहर की रक्षा के लिए प्राचीन स्मारकों के पुनर्रोद्धार का काम काम कर रही है।

दो दशक के बाद अफगानिस्तान पर तालिबान फिर से काबिज हो गया, तालिबान ने ही ओसामा बिन लादेन को पनाह दी थी भारतीय विमान अपहरणकर्ताओं का मध्यस्थ बना और बामियान में बुद्ध की प्रतिमायें तोड़ी। तालिबान ने जिस रफ्तार से काबुल पर कब्जा जमाया और अपनी ताकत को दिखाया उसका अनुमान किसी को भी नही था। अंतर्राष्ट्रीय पटल पर यह बहुत बड़ी घटना है जो भारत के दृष्टिकोण से भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है इस घटना के बाद अमेरिका की छवि धूमिल हुई। अफगानिस्तान में दो दशक तक चली लड़ाई में अमेरिका और उसके सहयोगियों ने करीब 70,000 सैनिक गँवाए। अमेरिका ने इस लड़ाई पर लगभग दो लाख करोड़ डॉलर खर्च किए। युद्ध के अंत में अमेरिका एक भी सफलता नही गिना सकता है। उसने लादेन को पाकिस्तान में जाकर मार डाला, तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा जमाया है वहाँ पहले से बेहतर Infrastructure है अमेरिकी हथियारो समेत आधुनिक सैन्य बल है जो सीधे तालिबान की झोली में आ गया है। वर्ष 2022 और उसके बाद इस बात की आशंका है कि तालिबान अन्य आतंकी संगठनों को प्रशिक्षण हथियार और पैसा देकर इजरायल और भारत के राष्ट्रीय मामलों मे हस्तक्षेप करेगा। आशंका है कि तालिबान के कट्टर समर्थक पाकिस्तान और कई अन्य पक्ष तमाम संवेदनशील मुद्दों को लेकर हावी हो जायेगें। इनमें फलिस्तीन भी शामिल है। अफगानिस्तान में नया तालिबानी सरकार जब पहली बार सत्ता में आया तभी से पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी ISR और पाकिस्तानी सरकार उसे पैसा मुहैया कराने के साथ बढ़ावा भी दे रहे हैं। अगस्त के आरंभ में ही चीन ने स्पष्ट कर दिया था वह तालिबान को अफगानिस्तान के वैध शासक की मान्यता दे देगा। हाल ही में उसने बड़ी तेजी से अफगानिस्तान को लेकर अपनी आर्थिक दिलचस्पी बढ़ा दी है। चीन उस बावार कोरिडोर की सड़क को पूरा करने में लगा है जहाँ जमीन की एक पतली सी पट्टी चीन अफगानिस्तान को जोड़ती है। चीन का वन बेल्ट रोड प्रोजेकट भी अफगानिस्तान से गुजरता है पाकिस्तान के साथ ही नया तालिबान निश्चित तौर पर हमारे चारो ओर की गई चीनी घेराबन्दी का हिस्सा बन जायेगा और फिर चीन इसका इस्तेमाल हमारे खिलाफ करेगा। भारत को ऐसे में तालिबान के साथ कूटनीतिक माध्यम को बिना समय गँवाए मजबूत करना होगा माना कि वह भारत का विरोधी है लेकिन अभी उससे बातचीत और कूटनीतिक संबंध रखने मे ही बुद्धिमानी है।

तालिबान सरकार भले ही बनने के करीब हो लेकिन इससे यह पुष्ट नही होता कि अफगानिस्तान में सब कुछ सामान्य हो रहा है। भारत ने पिछले कुछ वर्षों में अफगानिस्तान के लागों के साथ मित्रता बढ़ाने की पहल की है। तीन अरब डॉलर खर्च कर अफगानिस्तान में डैम, सड़क, अस्पताल, संसद भवन बनवाए, ये ऐसे प्रोजेक्ट हैं जो अफगान के लोगों को मदद कर सकते हैं। भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला पाकिस्तान तालिबान के मदद के लिए तैयार बैठा है। अफगानिस्तान की नई सरकार के मसले पर उसके पड़ोसी देश ईरान, तजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान व तुर्कमेनिस्तान का क्या रवैया रहता है वह तालिबान सरकार को मान्यता देते हैं कि नही? भारत को इसपर नजर रखनी होगी।

तालिबान के आने से भारत में निम्न असर पड़ा है–

1. अफगानिस्तान तालिबान के नियन्त्रण में आने से आतंकवाद सबसे बड़ी चुनौती होगा तथा स्थितियाँ पाकिस्तान के पक्ष में होगी पाकिस्तान जानता है कि अफगानिस्तान जम्मू कश्मीर में आतंकवाद फैलाने के लिए उसकी मदद करता है तथा करता रहेगा, कंधार हाइजैक इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।
2. निवेश को बचाना चुनौती है भारत तीन बिलियन यू. एस. डालर का निवेश किया, 2200 करोड़ रुपये का निवेश तथा 600 करोड़ प्रोजेक्ट की घोषणा की है। तालिबान के आने के बाद भारत पर इस परियोजना का बुरा प्रभाव पड़ेगा।
3. अफगानिस्तान मे अपने मजबूत पकड़ को बरकरार रखना है। अफगानिस्तान की भू–राजनैतिक स्थिति हार्ट ऑफ एशिया कहा जाता है। चीन अफगानिस्तान में सबसे ज्यादा निवेश करने वाला देश है।

एक प्रमुख चुनौती राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित है। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में हमेशा से सबसे बड़ा खतरा उसके पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर सीमा पर स्थित पाकिस्तान व चीन के आपसी गठजोड़ को माना जाता है। भारत पाकिस्तान पर कोई सैन्य कार्यवाही करता है तो चीन व पाकिस्तान दोनों एकजुट हो सकते हैं। अमेरिका द्वारा अफगानिस्तान छोड़ने से जिस तरह तालिबान का वहाँ नियन्त्रण बढ़ रहा है, वह दिन ज्यादा दूर नही दिखाई पड़ता है कि तालिबान सत्ता अपना लेंगे।

तालिबान के उभार के संदर्भ में भारत की एक बड़ी चैनौती उसके द्वारा अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा कर लेने या उसमें हिस्सेदारी हासिल करने के बाद की स्थितियों से संबंधित है। तालिबान भारत के लिए घोषित तौर पर एक आतंकवादी संगठन है जिसका लोकतंत्र, मानवाधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, कला संस्कृति के संरक्षण, महिलाओं को बराबरी का दर्जा देने, आधुनिक शिक्षा हासिल करने, विवादों का समाधान बातचीत के माध्यम से करने इत्यादि में कोई विश्वास नही है। उसकी मंशा साफ है कि वह आतंक के बल

पर अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज रहेगा तथा धार्मिक आधार पर राज्य को संचालित करेगा।

भारत के समक्ष एक चुनौती यह भी है कि तालिबान के नियन्त्रण वाले अफगानिस्तान की जो स्थिति होगी उसके प्रभाव से कैसे बचा जाए। यदि तालिबान अफगानिस्तान पर पूर्णरुपेण कब्जा कर लेता है तो यह विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय आतंकी बलों के मनोबल को बढ़ाने वाला होगा।

भारत को अब अफगानिस्तान में अपनी भूमिका को विस्तार देने पर बल दिया है। भारत सरकार को अफगान सेना की मदद करनी चाहिए जिससे अफगानी सेना को मजबूती मिलेगी जिससे तालिबान सत्ता पर एकतरफा काबिज नही होगा। यह सही है कि तालिबान से वार्ता प्रक्रिया मे सम्मिलित होने का फैसला लेना भारत की विदेश नीति के परंपरागत आदर्शवादी रुप के विपरित प्रतीत हो सकता है किन्तु तालिबान जब बातचीत के माध्यम से अफगानिस्तान की सत्ता में भागीदार बन जायेगा तब यह भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल व्यावहारिक कदम होगा। लेकिन चुनौती यह है कि भारत जब तालिबान से बात करे तो उसमें तालिबान का प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से कोई हस्तक्षेप न हो और दुसरी चुनौती यह है कि इस वार्ता प्रक्रिया हेतु भारत को एक विश्वसनीय मध्यस्थ की तलाश होगी जिसका भारत व तालिबान दोनों से सम्पर्क है।

अफगानिस्तान के संदर्भ में भारत को एक और विकल्प पर काम करना चाहिए जिससे सत्ता में आने पर तालिबान पूर्व की भाँति बर्बर अलोकतांत्रिक सोच के साथ काम न कर पाये वह विकल्प है क्षेत्रीय संगठन या मोर्चा बनाने का। भविष्य मे तालिबान से बातचीत होनी चाहिए किन्तु इस सरकार को मान्यता देने में जल्दबाजी करना सही नही है। हम एक लोकतांत्रिक देश हैं आतंकियों द्वारा हथियाई गयी संस्था को मान्यता नही दे सकते। भविष्य में मानवीय आधार पर जनता के हित में और साथ ही अपने राष्ट्रहित को देखते हुए बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है।

REFERENCES

प्रताप राजा महेन्द्र 'इण्डिया एंड अफगानिस्तान *सैवेनीपर* 1958'

Sriniwasan G (2007 afganistan entry to SAARC will led gain for sub continent) *The Hindu*

The Times 15 Dec 2013

Annual report 2009-10, foreign affairs minister New Delhi

Prince Greth (2013) "*Indian's policy towords Afganistan*" Asia Asp available at:https://www.chathmhous.org/sites/default/files/public/research/asia/0815PPIndianafganistanpdf, 2 Dec 2020

वर्ल्ड फोकस मार्च 2021

वर्ल्ड फोकस जनवरी 2021

दैनिक जागरण संपादकीय, 7 सितम्बर 2021

दैनिक जागरण संपादकीय, 15 सितम्बर 2021

दैनिक जागरण संपादकीय, 30 अगस्त 2021

दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे दृष्टि सितम्बर 2021